बुद्धवर्ष २५४६, आषाढ़ पूर्णिमा, २४ जुलाई, २००२ वर्ष ३२ अंक १

धम्मवाणी

देसेथ, भिक्खवे, धम्मं आदिकल्याणं मज्झेकल्याणं परियोसानकल्याणं सात्थं सब्यञ्जनं केवलपरिपुण्णं परिसुद्धं ब्रह्मचरियं पकासेथ।

– विनयपिटक, महावग्ग, पृष्ठ २५

भिक्षुओ, आरंभ में कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी और अन्त में कल्याणकारी धर्म का उपदेश करो और अर्थ सहित, व्यंजन सहित, परम परिपूर्ण एवं परिशुद्ध ब्रह्मचरण का प्रकाशन करो।

विपश्यना साधना अब – आंतरिक प्रज्ञा द्वारा आंतरिक शांति

गुरुजी की पश्चिम देशों की यात्रा – अप्रैल से अगस्त २००२

दिवस १२, अप्रैल २१, न्यूयार्क, यू. एस. ए.

मनहट्टन में सेराटोन, न्यूयार्क की 'स्पिरिट इन बिजनेस' सभा में गुरुजी ने सुबह में की-नोट (मूल विषय से संबंधित) प्रवचन दिया। सर्वप्रथम उन्होंने बताया कि आध्यात्मिकता किसे कहेंगे और फिर उन्होंने व्यापारियों के लिए इसका महत्व बताया। एक समय था जब राजाओं के पास सत्ता हुआ करती थी और उनका समाज में प्रभाव था। अब राजनीतिज्ञों, प्रशासकों तथा व्यापारियों को वह स्थान प्राप्त है। अच्छा या बुरा जो भी है वह ऊपर से नीचे की ओर रिस कर आता है। इसलिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि व्यापारीगण नैतिक और धार्मिक जीवन जीयें, अपनी भलाई के लिए तथा दूसरों की भलाई के लिए भी।

किसी भी धर्म के लिए आध्यात्मिकता आवश्यक है, पर आध्यात्मिकता के लिए या आध्यात्मिक होने के लिए सांप्रदायिक धर्म आवश्यक नहीं है। आध्यात्मिकता को सांप्रदायिकता की बैसाखी जरूरी नहीं। लेकिन किसी भी धर्म के लिए आध्यात्मिकता का आधार अनिवार्य है। इसके बिना संप्रदाय मुर्दा है। यह उस खाली बरतन की तरह है जो बहुमूल्य रत्नों से जड़ित हो, जो बाहर से सुंदर भी लगे, लेकिन जिसमें आध्यात्मिकता का अमृत निःशेष हो गया है। यह एक विशाल और सुंदर प्रकाशगृह की तरह है जो तिमिराच्छन्न हो गया है, जहां भीतर प्रकाश की एक भी रेखा नहीं है। वह लोगों को कैसे सम्यक मार्ग दिखा सकता है?

बुद्ध ने सिखाया कि हम कैसे चार ब्रह्मविहारों – जैसे – करुणा, मुदिता, उपेक्खा और मेत्ता – की भावना कर सकते हैं –इन उदात्त गुणों को कैसे विकसित कर सकते हैं। जब कोई दुःखी को देखता है तब यह सोचने की बजाय कि यह इसी का किया है, इसी के कर्म का फल है, वह उस पर करुणा करता है। जब कोई सफल व्यक्ति को देखता है तब ईर्ष्यालु होने की बजाय वह मुदित होता है, प्रसन्न होता है। जब कोई विपत्ति का सामना करता है तब अपने मन का संतुलन खोने के बजाय वह शांत और तटस्थ रहता है, अर्थात उसमें उपेक्षा का भाव रहता है और कोई सभी जगह के सभी प्राणियों के प्रति निःस्वार्थ प्रेम करता है। यह उसकी मेत्ता भावना है। आध्यात्मिक व्यक्ति के ये ही गुण हैं।

प्रत्येक व्यवसायी को अपनी भलाई के लिए तथा दूसरों की भलाई के लिए ये गुण विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए।

गुरुजी ने तब अपनी कहानी कही कि वे कैसे धर्म के संपर्क में आये और इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि अगली पीढ़ी के बहुत सारे व्यवसायी आध्यात्मिकता में प्रभूत रुचि दिखा रहे हैं।

प्रख्यात पत्रकार जोश बारन ने गुरुजी का संक्षेप में साक्षात्कार लिया। क्रिश्चियन पादरियों में अविवाहित रहने की जो बात है तथा चर्च के भीतर उनके द्वारा कथित दुराचरण की बात जो आजकल मीडिया ने उठायी है उसके संबंध में इन्होंने प्रश्न पूछा। गुरुजी ने कहा कि विपश्यना एक ऐसा साधन है जिसने बहुतों को स्वाभाविक रूप से ब्रह्मचर्य जीवन जीने में सहायता की है, क्योंकि विपश्यना बिना कामवासना को दबाये उसका सामना करने में, बिना उन्मुक्त या स्वेच्छाचारी बनाये, उसका जड़ से खात्मा करने में सहायता करती है। गुरुजी ने कहा कि हर कैथोलिक पुजारी को अपने जीवन में जीसस के गुणों को आत्मसात करने की ऊंची आकांक्षा रखनी चाहिए। विपश्यना एक ऐसा उपकरण है, साधन है जो इसे आसान बना देती है। बाद में उन्होंने अपने कमरे में प्रेस के लोगों को साक्षात्कार दिया। एक डच टेलिविजन स्टेशन ने भी विपश्यना के बारे में उनका साक्षात्कार लिया।

दिवस १३, अप्रैल २२, न्यूयार्क, यू. एस. ए.

जब गुरुजी और माताजी न्यूयार्क पहुँचे तब वहां असह्य गर्मी थी। लेकिन जल्दी ही तापमान घटने लगा और इतना घट गया कि बहुत ठंडा हो गया। गुरुजी का निवास सेंट्रल पार्क के निकट था और ठंडी के बावजूद वे पार्क में सुबह टहलने गये।

बाद में दिन में वे शेराटन गये और बहुत से मीडिया के लोगों को साक्षात्कार दिया। तीसरे प्रहर उन्होंने कांफ्रेंस में भाग लेने वालों को विपश्यना और आनापान पर एक प्रवचन भी दिया। जिस कमरे में वे प्रवचन दे रहे थे वह लोगों से खचाखच भरा था। विपश्यना शिविरों पर बोलने के बाद गुरुजी ने अपनी कहानी कही। कैसे धर्म ने उनके जीवन में इतना सामंजस्य लाया, कैसे उनका संबंध मजदूरों के साथ सुधरा और कैसे उन्होंने अपना लाभ औरों के साथ बांटना शुरू किया। विपश्यना ने लोकधर्मों का सामना करने में उनकी सहायता की। जब म्यांमार में व्यापार का राष्ट्रीयकरण किया गया, बजाय उदास और चिंतित होने के, वे खुश हुए यह सोचकर कि वे अब धर्म को अधिक-से-अधिक समय दे सकेंगे। जिस दिन व्यापार राष्ट्रीयकृत हुआ वे घर आये और धर्म के ऊपर एक लेख लिखने में लग गये जिस पर वे पहले से ही काम कर रहे थे। वे चिंतामुक्त हो गये। उन्होंने देखा कि बड़ी से बड़ी हानि भी उन्हें विचलित नहीं कर सकी। धर्म ने जीवन के चढ़ाव-उतार, सुख-दुःख में अकंपता तथा निश्चल रहने की ताकत दी।

प्रवचन के बाद वे साधक जिनको उन्होंने सत्तर के दशक में धर्म

सिखाया था और जो अब स्वयं धर्म सिखा रहे थे, उनके पास उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने आये। वे उन्हें फिर से देखकर और उनकी दुनियावी सफलता पर बहुत खुश हुए।

दिवस १४, अप्रैल २३, न्यूयार्क, यू. एस. ए.

सम्मेलन के अंतिम दिन गुरुजी ने पुनः 'व्यवसाय में आध्यात्मिकता' पर प्रवचन दिया। उन्होंने कहा –मेरे देश में अतीत काल में जब कोई प्राकृतिक विपदा आती थी या अकाल आदि पड़ता था तब लोग प्रायःकर राजा को दोष देते थे और कहते थे राजा के अनैतिक होने का ही फल प्रजा को भोगना पड़ता है। तब राजा धार्मिक तथा ईमानदार जीवन जीने की प्रतिज्ञा करता था।

कहा जाता है 'यथा राजा तथा प्रजा'। इसलिए समाज के नेताओं पर अधिक जवाबदेही है। उन लोगों के पास दूसरे लोगों को प्रभावित करने का अधिक अवसर भी है।

'जब मैंने धर्म के पथ पर पहला कदम रखना प्रारंभ किया मैंने अनुभव से सीखा कि आध्यात्मिकता किसी एक की बपौती नहीं है, न तो समाज के किसी एक खास वर्ग की ही। चाहे पुरोहित, मजदूर, शिक्षक, मूर्ख, करोड़पति और गरीब हो, सभी समान रूप से आध्यात्मिक हो सकते हैं।'

समाज को जितना व्यापारीवर्ग तथा नेता प्रभावित कर सकता है, उतना और कोई नहीं, चूंकि समाज के साथ इन लोगों का पारस्परिक क्रियाकलाप जितना होता है उतना और किसी का नहीं। व्यापारियों को कर्मचारियों के साथ, कारखाने के मजदूरों के साथ, ग्राहकों के साथ, सरकारी एजेन्सियों के साथ व्यवहार करना होता है। जैसे-जैसे वे आध्यात्मिक होते हैं उनका व्यवहार अधिक भद्र होता है, नम्रता का होता है और वे बहुत से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने लगते हैं। व्यापार में तेज दिमाग की जरूरत होती है जो जल्दी निर्णय कर सके। जब मन शांत होता है, उद्विग्न नहीं होता है तब वह सही निर्णय ले सकता है।

आध्यात्मिकता और अच्छा व्यवसाय साथ-साथ चलते हैं। दोनों सिर्फ मालिकों, भागीदारों, कर्मचारियों तथा ग्राहकों के कल्याण में योगदान नहीं करते बल्कि स्वयं व्यापारी को भी सच्चा सुख देते हैं जो उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

व्यापारी बराबर भागदौड़ की जिंदगी जीता है। वह खूब धन कमाना चाहता है –और–और। जिंदगी के किसी पड़ाव पर आकर वह यह सोचने लगता है कि पैसे के साथ उसको नाम और यश भी कमाना चाहिए। इस इच्छा की पूर्त्ति के लिए वह दान देना शुरू करता है। ऐसे दान से आपको सच्चा आनंद नहीं मिलेगा। दान देना एक उदात्त कला है। सच्चा दान वह है जो बदले में बिना किसी चीज की आशा किये दिया जाता है। कोई दान देता है या दूसरे की सेवा करता है अपने अहंकार को दूर करने के लिए, गर्व को खर्व करने के लिए, न कि अहंकार से चूर होने के लिए। पूरी मनोवृत्ति होनी चाहिए अधिक-से-अधिक लोगों की सेवा करने की। यही सब कुछ है।

दिवस १५, अप्रैल २४, न्यूयार्क, लेनोक्स, मेसाचुसेट्स

यातायात अवरोध के साथ-साथ अप्रत्याशित विलंब के कारण, न्यूयार्क से दस-दिवसीय कार्यकारिणी विपश्यना शिविर का स्थान लेनोक्स के इस्टोवर रिसोर्ट, मेसाचुसेट्स तक की यात्रा अत्यधिक लंबी हुई। वह मोटर होम (एक विशेष प्रकार की मोटर जहां घर की तरह सुविधाएं होती हैं।) जिसमें वे उत्तरी अमेरिका का भ्रमण करने वाले थे वह कनेक्टीकट स्टेट के स्वागत केंद्र पर समयानुसार नहीं पहुँच पायी। सभी लोगों को अपनी गाड़ियों से उतरकर वहीं खुले में अपना भोजन करना पड़ा। अंततः मोटर होम यातायात से मुक्त होकर चली और दोपहर लगभग ३ बजे स्वागत केंद्र पर पहुँची।

गुरुजी प्रातःकाल न्यूयार्क के लिए रवाना हुए लेकिन शाम होने तक इस्टोवर रिसोर्ट नहीं पहुँचे।

वह एक दुष्कर यात्रा थी जिसमें सामान खोलना तथा समेटना बार-बार होता था। रास्ते में अपूर्वानुमानित पड़ाव थे और इन्हीं सब कारणों से दिन की समाप्ति पर हम सभी लोग पूर्णरूप से थक गये थे।

फिर भी गुरुजी को तैयार होकर शिविर में आनापान की साधना सिखाने जाना था जिसमें बड़े-बड़े व्यापारी, नेता एवं प्रशासक आये हुए थे। आनापान की समाप्ति पर सभी साधक धम्महाल से चले गये और वहां पर शिविर में सेवा देने वाले सभी धर्मसेवकों के लिए संक्षिप्त मैत्री सत्र का आयोजन हुआ।

दिवस १६, अप्रैल २५, लेनोक्स, मेसाचुसेट्स

सूर्य के उदय होने पर भी वह एक ठंडा दिन था।

गुरुजी अपने नित्यक्रमानुसार सुबह की सैर कर चुके थे। गुरुजी एवं माताजी के साथ यात्रा में कई पुराने साधक, सहायक आचार्य, आचार्य सुबह एवं शाम की सैर में शामिल होते थे। गुरुजी को इसी कारण केंद्र पर उपलब्ध सुविधा के निरीक्षण का और वरिष्ठों से धर्मकार्य-संबंधी बातों पर विचार-विमर्श करने का सुअवसर मिल जाता।

शिविर का प्रथम दिन तनावपूर्ण है और साधक अभी बैठ ही रहे हैं। जान एवं गेल बेरी शिविर में आचार्य की हैसियत से गुरुजी की सहायता कर रहे हैं। बहुत से सहायक आचार्यों और धर्मसेवकों ने खूब परिश्रम किया था कि यह अस्थायी शिविर सुचारु रूप से चल सके।

गुरुजी ने दोपहर में साधकों को निजी मुलाकात करने की प्रथा को जारी रखने का निर्णय किया। कई वर्षों से (जब वे केंद्रों पर रुक रहे हों या अस्थाई शिविर स्थल पर हों) वे अपने साधकों के लिए इसी समय उपलब्ध होते हैं जो अपनी साधना संबंधी, व्यवस्था संबंधी एवं व्यक्तिगत प्रश्नों का हल पाने के लिए उनके पास एक-साथ या अकेले में आकर मिलते हैं।

दिवस १७, अप्रैल २६, लेनोक्स, मेसाचुसेट्स/बोस्टन/लेनोक्स

गुरुजी और माताजी बोस्टन में एक आम सभा को संबोधित करने के लिए कार से तीन घंटे की यात्रा कर वहां पहुँचे। इसबार मोटर होम में उनको सारा समय बैठे रहना पड़ा क्योंकि मोटर होम खूब डोल रही थी।

वाहन एक गार्डन पार्किंग में पार्क किया गया। तीसरे पहर २ बजे ही गुरुजी भोजन कर सके। स्थानीय साधक गुरुजी, माताजी तथा उनके साथ यात्रा करने वाले सभी लोगों के लिए भोजन लाये। ब्रूकलीन हाईस्कूल के आडिटोरियम में प्रवचन था जिसको सुनने तरुण साधकों के कुछ माता-पिता आये। तरुण साधकों की इच्छा थी कि उनके माता-पिता गुरुजी से व्यक्तिगत मुलाकात करें, उनकी बातों को स्वयं सुनें। माता-पिता तथा दूसरे संबंधियों के लिए इस सरल तथा व्यावहारिक ज्ञान को सुनना अच्छा था। कुछ माता-पिता जिन्होंने कोई शिविर नहीं किया था वे प्रवचन के बाद उनसे मिलने आये।

प्रवचन के बाद एक प्रश्न था –मैं एक विपश्यी साधक हूं। मैं कैसे माता-पिता को विपश्यना की ओर आकर्षित कर सकता हूं? गुरुजी ने उत्तर दिया – अपने उदाहरण से, अच्छा पुत्र बनो, अच्छी पुत्री बनो, अच्छा आदमी बनो। जब तुम्हारे माता-पिता देखेंगे कि तुम शांत और सुखमय जीवन जी रहे हो तब वे निश्चय ही धर्म की ओर खिंचेंगे। तुम्हारा शांत और सामंजस्यपूर्ण जीवन उन्हें धर्म की ओर आकर्षित करेगा। तुम्हें निश्चय ही माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। यह तुम्हारा प्रथम धर्म है, प्रथम कर्त्तव्य है।

दिवस १८, अप्रैल २७, लेनोक्स, मेसाचुसेट्स

तीन घंटे की लंबी यात्रा और बोस्टन में उनके रुकने की असमर्थता को ध्यान में रखकर गुरुजी बोस्टन में होने वाले एक-दिवसीय शिविर में उपस्थित नहीं हो सके। जो बोस्टन के साधकों के लिए घाटा था, वह इस्टोवर कोर्स के साधकों के लिए लाभ साबित हुआ।

अपराह्न में शिविर के बहुत से साधकों को उन्होंने निजी तौर पर साक्षात्कार दिया। शिविरस्थल के आसपास के पुराने साधक भी उनसे भेंट

करते रहे। कुछ लोग तो बहुत लंबी यात्रा कर उनसे कुछ ही मिनट के लिए मिलने आये थे।

शिविरस्थल के निकट जंगली भैंसों का एक झुंड चरने के लिए शाम को आ रहा था। गुरुजी एक निजी साक्षात्कार के बाद शाम को टहलने के लिए निकले थे। किसी ने उन्हें बताया कि ये जानवर किसी जमाने में पूरे देश में सामान्य रूप से पाये जाते थे, लेकिन बहुत बड़ी संख्या में उनके मारे जाने से वे अब बहुत नहीं देखे जाते। चूंकि गुरुजी ने ऐसा जानवर पहले कभी नहीं देखा था, अब मेत्ता देते हुए 'सभी प्राणियों' की सूची में एक प्राणी और बढ़ गया!

दिवस १९, अप्रैल २८, लेनोक्स, मेसाचुसेट्स

जब कभी गुरुजी किसी केंद्र पर या शिविरस्थल पर होते हैं तब वे स्वयं चौथे दिन प्रातःकाल विपश्यना सिखाते हैं। उन्होंने यहां भी उसी नियम को निभाया।

पूरी यात्रा में उन साधकों को जिन्होंने बहुत से शिविर किये हैं लेकिन किसी ऐसे शिविर में भाग नहीं लिया जिसमें गुरुजी उपस्थित हों, इनसे आनापान और विपश्यना सीखने का अवसर या तो एक-दिवसीय शिविर में या दस-दिवसीय शिविर में मिला।

दस-दिवसीय शिविर में एक साधक तीन दिनों से अधिक आनापान का अभ्यास अपने चंचल चित्त को शांत करने के लिए करता है ताकि वह विपश्यना ध्यान कर सके। इसलिए दिवस ४ को प्रत्याशित उत्तेजना रहती है। जब नया साधक विपश्यना सीखता है तब, उसके अंदर जो सत्य है, मानो उसे देखने के लिए एक वातायन खुल जाता है। गुरुजी के शब्दों में साधक जीवन में पहली बार धर्म की गंगा में डुबकी लगाता है। कितना बड़ा सौभाग्य उस साधक का जो विपश्यना के मुख्य आचार्य गुरुजी और माताजी की उपस्थिति में ऐसा करता है।

दिवस २०, अप्रैल २९, लेनोक्स, मेसाचुसेट्स

जब इस यात्रा की योजना बनायी जा रही थी, उस समय गुरुजी का स्वास्थ्य एक बड़ी चिंता की बात थी। आज उनके सहायकों ने अनुभव किया कि हो सकता है उन्हें एकाध साक्षात्कार को रद्द करना होगा, क्योंकि रास्ते में नयी-नयी नियुक्तियां, नये-नये एंगेजमेंट्स जोड़ी जा रही हैं जिनसे नयी समय-सारिणी बहुत ही व्यस्त होती जा रही है। लेकिन गुरुजी ने जो-जो वादा पहले किया था, उसके अनुसार ही चलने पर जोर दिया। वोस्टन ग्लोव का एक संवाददाता, जिसका नाम रिक बेलो था, गुरुजी का साक्षात्कार लेने आया।

दोपहर में साधकों के साथ साक्षात्कार के बाद धर्मसेवकों के साथ एक छोटी सभा हुई।

शाम को गुरुजी ने कृपालु कृपालु योग केंद्र पर प्रवचन दिया। यह केंद्र यूनाईटेड स्टेट्स में सबसे बड़ा योग केंद्र है। उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत ने विश्व को दो अमूल्य दान दिये हैं – वे हैं योग और विपश्यना। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योग का प्रयोग विश्वभर में सभी धर्मों के तथा सभी सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों ने किया है। विपश्यना भी पूरे विश्व में विभिन्न पृष्ठभूमि वाले लोगों द्वारा अधिकाधिक मात्रा में अपनायी जा रही है, ग्रहण की जा रही है। इन दोनों विधियों में एक धार्मिक संप्रदाय से दूसरे धार्मिक संप्रदाय में धर्म परिवर्तन की आवश्यकता नहीं होती।

श्रोताओं द्वारा पूछे गये बहुत से प्रश्नों का उत्तर गुरुजी ने दिया। जब किसी ने पूरे दस-दिवसीय शिविर करने की आवश्यकता के बारे में पूछा तब गुरुजी हँसे और कहा कि यह युग ही ऐसा है जिसमें आदमी तुरंत कुआं खोद कर पानी पीना चाहता है लेकिन मन के गहनतम स्तर पर काम करने के लिए अभ्यास की निरंतरता आवश्यक है। इसका फल शीघ्र मिलता है और सब समय मिलता है लेकिन इसके लिए ईमानदारी से काम करना आवश्यक है।

एक दूसरे व्यक्ति ने सामूहिक साधना करने के महत्त्व के बारे में प्रश्न पूछा। गुरुजी ने उत्तर दिया कि अकेले में ध्यान करना महत्त्वपूर्ण है और समूह में भी ध्यान करना महत्त्वपूर्ण है। दोनों के अपने-अपने लाभ हैं। जब कोई गंभीर दीर्घ शिविर करता है तो एकांत ध्यान आवश्यक है पर बीच-बीच में सामूहिक ध्यान करना बड़ा ही सुखकर है।

बुद्ध का एक-एक शब्द सत्य पर आधारित है जिसका अनुभव किया जा सकता है। एस एल प्लेटो, गोराई, मुंबई में, जब ग्लोबल पगोडा का निर्माण कार्य पूरा हो जायगा, वहां पर आठ हजार साधक एक-साथ बैठ सकेंगे। तब बुद्ध के उस कथन की सत्यता हमारी अनुभूति पर उतरेगी। उन्होंने कहा था कि साधकों का एकत्र होना सुख है और वह सुख और बड़ा सुख हो जाता है जब वे सामूहिक साधना करते हैं – 'सुखा सङ्घस्स सामग्गी, समग्गानं तपो सुखो।'

दिवस २१, अप्रैल ३०, लेनोक्स, मेसाचुसेट्स

साधकों को व्यक्तिगत साक्षात्कार देकर गुरुजी ध्यानकक्ष से जैसे ही लौटे, फोन की घंटी बजी। इलिनोई के वेलनेस मैगजिन के संवाददाता का यह फोन था। गुरुजी को बाद में इस यात्रा में ही वेलनेस केंद्र पर एक प्रवचन देना कार्यक्रम में शामिल है। मैगजिन का संपादक चाहता था कि उसके पहले गुरुजी का एक साक्षात्कार उसमें छपे। संवाददाता ने गुरुजी से लगभग एक घंटे तक फोन पर बातचीत की।

देर अपराह्न में बोस्टन ग्लोब का एक स्टाफ फोटोग्राफर गुरुजी और माताजी का फोटोग्राफ लेने तथा उस हॉल का भी फोटो लेने आया जिसका इस्तेमाल ध्यानकक्ष के रूप में किया गया था। शिविर ने मीडिया का बड़ी मात्रा में ध्यान आकर्षित किया, क्योंकि बहुत सारे प्रभावशाली व्यापारी, ऊंचे दर्जे के पेशेवर लोग तथा प्रशासक इस दस-दिवसीय आवासीय शिविर में भाग लेने आये थे। एक सौ से अधिक लोगों ने शिविर में भाग लिया था तथा वे गंभीरता से काम कर रहे थे।

इसके एक दिन पूर्व एक पत्रकार ने गुरुजी से पूछा था कि क्या वे शिविर का बाह्याकार और विषयवस्तु विभिन्न लोगों के जैसे कैदियों, व्यापारियों आदि के लिए उपयुक्त होने के लिए बदल देते हैं। गुरुजी ने कहा कि इनमें कोई परिवर्तन नहीं किया जाता। ये सब के लिए एक-समान होते हैं। बुद्ध की शिक्षा सार्वजनीन है, यह सब पर समान रूप से लागू होती है। मनुष्य तो मनुष्य है। चित्त के अकुशल स्वभाव-शिकंजे के कारण वे दुःखी होते हैं। और जब वे अंदर के सत्य का साक्षात्कार करने लगते हैं, तब वे उस अकुशल स्वभाव-शिकंजे से बाहर आने लगते हैं।

क्रमशः...

****

टेलीविजन पर पूज्य गोयन्काजी का प्रवचन

आस्था चैनल पर प्रतिदिन पूज्य गोयन्काजी का हिन्दी में प्रवचन प्रसारित हो रहा है।

समय प्रातःकाल : ९:३० बजे से ९:५० बजे तक और बच्चों के लिए सायंकाल ५ बजे से ५:२० बजे तक।

इसके अतिरिक्त, पूज्य गोयन्काजी का दस-दिवसीय अंग्रेजी प्रवचन का प्रसारण प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल ११ बजे हो रहा है।

****

भूटान में प्रथम विपश्यना शिविर

भूटान में प्रथम विपश्यना शिविर "विपश्यना के द्वारा चरित्र निर्माण सम्बन्धी नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारने सम्बन्धी" वर्कशाप के अंग के रूप में २१ मई से ३ जून तक आयोजित किया गया था। इसमें २१ पुरुष सम्मिलित हुए थे जो शिक्षा मंत्रालय, थिम्पू युवक केंद्र के शिक्षा अधिकारी तथा वरिष्ठ अध्यापक थे। इस शिविर में सम्मिलित होने वाले अधिकतर साधकों ने कहा कि हमें विपश्यना से बहुत लाभ हुआ है। बहुत लोगों ने अपनी इच्छा प्रकट की कि स्थाई विपश्यना केंद्रों में हमें अधिक से अधिक शिविर करने हैं। शिक्षा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री संजय न्गेदुप वर्कशाप के समापन समारोह में उपस्थित थे और वर्कशाप के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर सन्तोष प्रकट किया। वर्कशाप के समापन पर यह निर्णय लिया गया कि दूसरा दस-दिवसीय विपश्यना शिविर महिला अध्यापकों के लिए उसी स्थान पर सितम्बर में आयोजित किया जायगा।

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री ईश्वरलाल शाह, कच्छ
२. श्रीमती हीराबेन शाह, कच्छ
३. डा. रोहित सावला, कच्छ
४. श्रीमती शारदाबेन के. गनात्रा, कच्छ
५. डा. हमीर गानला, पुणे
६. डा. (श्रीमती) निर्मला गानला, पुणे

नवनियुक्तियां

Assistant Teachers:

Mr Laith & Mrs Melanie Wark, Australia / UAE

Children Course Teacher

Mrs. Justine Shaskolsky, South Africa

विपश्यना साधना संस्थान, (नई दिल्ली-३०) पर आयोजित होने वाली कार्यशालाएं (वर्ष २००२)

(१) जुलाई २३-३१ सहायक आचार्यों का प्रशिक्षण
(२) अगस्त २०-२८ पालि-प्रशिक्षण
(३) सितंबर २४-२८ धर्मसेवकों धर्मसेविकाओं तथा ट्रस्टियों का प्रशिक्षण
(४) अक्तूबर २२-३० सम्राट अशोक के अभिलेखों पर अध्ययन-गोष्ठी
कृपया पंजीकरण एवं विवरण हेतु दिल्ली-संपर्क पते पर संपर्क करें।

मुंबई में बच्चों के शिविर

दिनांक	स्थान	पात्रता	पंजीकरण दिनांक
११.८.०२	अंधेरी	१३ से १६ वर्ष	८ और ९-८
१८.८.०२	विद्याविहार	१३ से १६ वर्ष	१५ और १६-८

शिविर कालावधिः सुबह ८:३० से दोपहर २:३०. **फोनः** ६८३४८२०, २८१२४१६.
शिविर स्थलः १) अंधेरीः दादा साहेब गायकवाडक्रेंद्र, डा. बाबा साहेब अंबेडकर मार्ग, आर.टी.ओ. कार्नर, चार बंगला, अंधेरी (प.), मुंबई-४०००५३. **२) विद्याविहार :** सेमिनार हाल, द्वितीय मंजिल, इंजिनियरिंग कालेज, सोमय्या विद्याविहार, विद्याविहार (पूर्व), मुम्बई. **सूचनाः** * सभी बच्चे अपने आसन साथ लाएं। * आने के पहले (उपरोक्त समय और फोन नं. पर) अपना नाम अवश्य लिखाएं। * देर से आने पर प्रवेश नहीं मिलेगा। * बच्चे अपने साथ खेल का कोई सामान नहीं लाएं।

दोहे धर्म के

जग में बहती ही रहे, शुद्ध धर्म की धार।
दुखियारे प्राणी सभी, होंय दुखों के पार॥

बहे सकल भू-लोक में, धरम-गंग की धार।
जन जन का होवे भला, जन जन का उपकार॥

धर्म भूमि से फिर बहे, शुद्ध धर्म की धार।
एक बार होवे पुनः, सकल जगत उद्धार॥

व्याकुल मानव मानवी, चखें धरम का स्वाद।
रोग शोक सारे मिटें, विपदा मिटे विषाद॥

बजे नगाड़े धर्म के, गूंज उठे सब देश।
दुखियारों के दुख मिटें, कटें कर्म के क्लेश॥

मंगलकारी धर्म का, ऐसा प्रबल प्रभाव।
सूखे सरिता दुःख की, सुख का बहे बहाव॥

मेसर्स मोतीलाल बनारसीदास

• ११-१३, सनस प्लाजा, १३०२ बाजीराव रोड,
पूणे-४११००२, फोनः ४४८-६१९०
• महालक्ष्मी मंदिर लेन, २२ भूलाभाई देसाई रोड,
मुम्बई-४०००२६, फोनः ४९२-३५२६
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

मंगळकारी धरम रो, किसौं क प्रबल प्रभाव।
अंतरमन रा दुख मिटै, सीतळ हुवै सुभाव॥

ब्याकुल मानव मानवी, चखै धरम रो स्वाद।
रोग सोक सारा मिटै, बिपदा मिटै बिसाद॥

चल साधक चलता रवां, देस और परदेस।
धरम चारिकास्यूं कटै, जन जन मन रा क्लेस॥

धरम धरा स्यूं फिर हुवै, जग मँह धरम प्रसार।
जन मन रा दुखड़ा कटै, पावै सुख रो सार॥

दसूं दिसा मँह धरम रो, गूंजै मंगळ घोस।
त्रिस्णा-तड़पत जीव नै, मिलै सुखद संतोस॥

लोक लोक मँह धरम रो, फेलै सुभ आलोक।
लोक लोक मंगळ जगै, होवै सभी असोक॥

मेसर्स गो गो गारमेंट्स

३१ -४२, भांगवाड़ी शॉपिंग आर्केड,
१ला माला, कालबादेवी रोड, मुंबई - ४००००२.
फोनः ०२२- २०५०४१४
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) ४४०८६, ४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४६, आषाढ़ पूर्णिमा, २४ जुलाई, २००२**

वार्षिक शुल्क रु. २०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. २५०/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१.** Regn. No. AR/NSK-46/2002

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : (०२५५३) ४४०७६
फैक्स : (०२५५३) ४४१७६
Website: www.vri.dhamma.org
e-mail: dhamma@vsnl.com